

रामलोचन ठाकुर

इतिहासहंता : इतिहासहंता

रामलोचन ठाकुर

इतिहासहंता



२१७१७६३

इतिहासहंता—शिखा प्रकाशन क पहिल प्रस्तुति, दुर्घर्ष अग्निहस्ताक्षर रामलोचन ठाकुर क पहिल कविता संकलन आ अग्निलेखन क पहिल दस्तावेज अइ, साबित करैए जे कविता मानसिक व्यभिचार क लेल शब्दक यूटोपिया नै अइ.

अग्निलेखन : यथास्थिति क प्रति अतिशय असहिष्णु, आक्रोश क तीक्ष्णभावाभिव्यक्ति अइ मार्क्स-वादी चिंतन स संपृक्त संघर्ष चेतना क निर्माता. स्व-निर्माण क प्रति घोर आस्थावान, तँ विध्वंस के आवश्यक मानैत कोनो तरहक सुधारवाद के पूर्णतः अस्वीकार करैए. मानैए जे मनुखक जीवनक सुन्दरतम क्षण ओ हेतै जखन ओ क्रांति क साक्षी बनत-सहभागी बनत. तावत साहित्य क काज छै संघर्ष क वैचारिक धरातल तैयार करैत रहनाइ जाइ मे मात्र स्थिति निरूपण नै, दिशाबोध भयंकर रूप स आवश्यक छै. ★★

इतिहासहंता

रामलोचन ठाकुर

शिखा प्रकाशन ॥ कलकत्ता

इतिहासहंता : कविता संकलन : रामलोचन ठाकुर

प्रकाशक—

कुणाल-अग्निपुष्प

शिखा प्रकाशन,

बिहार प्रवासी छात्र निवास,

१७१/ए, महात्मा गांधी रोड,

कलकत्ता-७

मुद्रक—

पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स,

३२-बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट,

कलकत्ता-५

आवरण : कुणाल

मूल्य—

साधारण—दू टाका

विशेष—चार टाका

कापीराइट : रामलोचन ठाकुर

दोसर खेप—फरवरी, १९७८ 99/5, Dr. Deodar Rahman Road
Calcutta—700033.

इतिहासहंता : कविता संकलन : रामलोचन ठाकुर

क्रम

१. मैथिली	७
२. सर्वहारा टी स्टाल	८
३. बिध्वंस मात्र	११
४. नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता	१३
५. अन्तरक ज्वाला हमर...	१५
६. अग्रजक नाम/प्रजातंत्र	१७
७. अग्रजक नाम/केहन लागत अइके	१८
८. अग्रजक नाम/हम बिसरि गेल छी	२१
९. एहि जम्बूद्वीपक भारत खंड मे	२२
१०. समानधर्मांक नाम/ओना होइत त इएह आयल'छि	२५
११. अग्रजकनाम/इतिहासहंता	२८
१२. अनुजक नाम/काज अहीक थिक	३३
१३. व्यवस्थाक नाम/चेतौनी	३४
१४. कंकावतीक कैबरे	३५
१५. सांझ हमरा आङ्गन मे	३६
१६. जेठुआ मेघ	३७

मैथिली

बहुत दिन पहिनेक थिक ई बात

मिथिलाक राजा जनकक बेटी

आ

अयोध्याक राजा दशरथक बेटा

रामक स्त्री

मैथिली केँ

बनवासक समय शुन्य पर्ण कुटी सं

चोरा क ल गेल छल

लंकापति रावण लंकाराज

आ खबरि पवितहि राम

क देने छलथिन हमला लंकाराज पर

सभ राक्षस केँ मारि

ल अनने छलाह आपस

मैथिली केँ

कहैत छलीह मैया

थिक ई सत्यकथा

मुदा हमरा बुझाइए जे कुनू खिसा थिक

सत्य त ई थिक ले
 मैथिली के
 बन सं नवि
 नैहरे सं
 बलजोरी चिसिअबैत
 ल गेल छल राक्षस-राज
 आ ओखन रखने छनि
 अशोक बाटिका मे
 शोकाकुल मैथिली जतय
 कुहरि-कुहरि
 अपन जीवनक अन्तिम क्षणक
 प्रतीक्षा क रहल छथि
 की करती बेचारी
 विदेह बाप पहिनहि देह त्यागि चुकल छथिन
 राम छथिन नपुंसक
 आ
 हुनके सं जनमल
 लव आ कुश की वीर पुरुष हेथिन
 काल्हियो त देखल
 दशरथक बरखी मे
 आयल अभ्यागत लग
 जनोंक हेड़रा देने
 तीनू बापते
 मैथिलीक आपसीक सिपारिसक
 भीख मङ्गैत छलाह •

२७ मई, १९७२

सर्वहारा टी-स्टाल

(सर्वहारा टी-स्टाल महाकाव्यक एकांश)

विशाल एक गोट पंक्ति—
 हमर पड़ोसी रिक्सा बला
 अन्नक अभावें कंकाल भेल ओकर शरीर
 आ औषधक अभाव मे
 काहि कटैत ओकर तीन बर्खक रोगाह नेना,
 ठकुरिया पुलक कात मे
 'बाबू दूदि पयसा' क माला जपैत
 कोढ़ि अपंग भीखमंगाक दल,
 सार्वजनिक मुन्नालय लग
 पंक्तिवद्ध वेश्याक दल
 आ
 तैखन कात द'
 कटाउम करैत एक दल कूकुरक
 एकटा पिलियाक पाछां
 जेना कुनू स्वयंवर मे
 राजकुमारी केँ पाबै लेल
 अपन वीरताक प्रदर्शन करैत हो

—चलि जाइए

आ तकर बाद
 ओ हस्तरेखा बिचारक
 जे भोर सं सांझ धरि

लोकक हाथक रेखा देखि भाग्यक निर्णय करैछ
(आ जकर अपना हाथक रेखा

भरिसक मेटा गेल छैक)

ओ बतहा जे

रोज बीड़ी पीबै लेल माछि लैत छल

दू गोटे पाइ

आइ—मरि गेल

केओ कहैए

तरि गेल—हम बजैत छी

आ तकर बादे 'शेलीकेफे'

कुनू अन्तर नबि होइत छैक

'शेलीकेफे' 'शाकी' 'सर्वहारा' बा

शिवालय मे

सभठाम लोकक भीड़

आ भीड़ मात्र भीड़ होइए

अभ्यस्त लोक

लज्जा निवारण लेल

कपरा पहिरब बा

फैसन मे नाइट रहब

एके बात थिक

त कि

हमरो लेल कविता लिखब

कुनू फैसन थिक

बा

आदति •

२४ अक्टूबर, १९७२

इतिहासहंता/१०

विध्वंस मात्र

यद्यपि हम गाबी गीत

मीत

हो किन्तु बैसि गेल आंत जकर

आ क्षुधा उवाल सं दग्ध मन

उधिआइत रक्त

नबि मोसि

कलम छीनल हाथक

की बोरि देत नबि

रक्तहि मे

आङ्गूर अपन

होयत निश्चित काव्यक सर्जन

(बरु छन्द पतन)

आ

सरिपहुं उगिलत आगि कलम

हो चिनगीये

रखने अपना अन्तरक मध्य

श्रमता अजस्र

करबाक सृष्टि दावानल कें

जे जड़ा करत सुझाह

मात्र कूड़े-कर्कट नबि

इतिहासहंता/११

घास-पात

बंसबिंदी-बेल-बबूर-बंर-पीपरक गाछ

निज छाया मे

नबि दैछ कदन्नो जे जनमय

संगहि डाहत से

फूल-पात

बज्जर-हरियर-पीयर

अथवा

जेकिछु पाओत

नबि देत बंचय

हुंकार हमर ते आइ प्रलय

विध्वंस मात्र विध्वंस

करत जे

पथ-प्रशस्त

नव निर्माणक

नबि हैत जतय पुनि

अनाहार वा रंग भेद

केओ ऊंच-नीच वा

छोट-पैघ

ते मीत

आइ नबि गीत

समय केर माछ

एक

विध्वंस मात्र

विध्वंस •

२४ जून, १९७४

इतिहासहंता/१२

नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता

आ

ओ बहुप्रचारित नाटक

जखन कएल गेल मंचस्थ

ठठाओल गेल पर्दा

सूनल गेल दर्शकक कोलाहल

फूल-मालाक बदला ई ट-पाथरक पथार आ

‘पर्दा-खसाड, पर्दा खसाड’

अहिना

बरखो होइत रहल पूर्वाभ्यास

कएल जाइत रहल मंचन

किन्तु अपन सड़ल कथक कारने

नबि पाबि सकल कहियो

दर्शकक सहानुभूति

बाह-बाही

खाइत रहल गारि-मारि

आ अखन

जखन फेर भ रहल मंच

ओही पुरना नाटकक

ओही पुरना मंचपर

नव तकनीक सं

इतिहासहंता/१३

नव निर्देशक निर्देशन में
 किछु कलाकार कें बदलि—
 थाकल ठेहिआयल दर्शक
 ओँघा रहलए/ओ नबि चाहैछ तुरन्ते यवनिकापात
 आ तें

जखन मंच सं उतरेए
 कुनू एक कलाकार
 दर्शक दीर्घा सं उठा कें ल जाइए
 एगो युवती कें
 प्रतिवादी भाइक हत्याक पश्चात्
 मंच पर कएल जाइए ओकरा संग
 सामूहिक बलात्कार
 अभिनयक नाम पर
 तैयो शान्त—एकदम चुप्पी आ
 आनन्दोन्मत्त भेल अभिनेता सभ
 क रहलए गरिथैया नाच
 'वीग' में

स्काच में सोडा मिलबैत निर्देशक
 खुसी सं आत्म विभोर
 फुलि क कुप्पा भ रहलए
 जे अन्त तक ओ
 आ उएह मात्र
 ओही गन्हाइत कथ्य बला नाटक कें
 सफल मंच करवा में
 सफलीभूत भेल ●

२७ मार्च, १९७३

अन्तरक ज्वाला हमर

जनै छी हम
 शब्द में नबि छैक ओ सामर्थ्य
 क सकै जे सही व्याख्या भावना कें आइ
 तद्यपि बन्धु !
 तोहर कल्पना केर
 सूर्य स्वर्णिम
 उदय सं पूर्वहि बनाओल गेल बन्दी
 आशकेर जे अल्पतम आलोक
 सेहो मिक्का गेल' छि
 पसरि गेल' छि गुज्जसन अनहार
 चारु कात
 तौ निष्प्राण सन निसबइ

गबदी मारि देलह
 नियति तोहर यह
 यद्यपि छी हमहुं निसबह
 किन्तु रखैछ निश्चित अर्थ
 प्रति निसबदता हमर
 अन्तरक उवाला हमर न मिझाइछ कूनहुं दिन
 उदधिक ठेउ सन
 जे उठैत अछि
 भ जाइछ पुनः विलीन
 चलैत' छि ई क्रम कतेको खेप
 आ
 पुनि उठय बड़का ठेउ
 अपन अजेय शक्तिक संग
 दैत' छि तोड़ि केहनो बान्ह
 बढि जाइछ पुनः
 बन प्रान्त सं ग्रामांचल
 पुनि शहर तक
 करैत एकाकार
 सन-सन करैत हहाइत
 स्वर संगीत शंखक नाद
 विजयोह्लास मे
 पुनि पांक उर्वर शक्ति
 नव निर्माण हेतु प्रदान करैत
 प्रलय केर पश्चात् हो नव श्रृष्टि
 थिक सिद्धान्त •

२८ अगस्त, १९७५

अग्रजक नाम / प्रजातंत्र

(कवि सोमदेवक लेल)

आ
 हमर जन्म
 एगो घटना वा दुर्घटना
 जे हो भेल' छि धरि एही काल मे
 किन्तु एतेटा भेलाक बादो
 ई परिवेश
 जेना अनचिन्हार लगैछ

भाइ !

हमरा मन अइ
 अहां कहने रही—
 पहिने एगो राजा होइ छलै
 राज्याधिकारी आ
 उत्तराधिकारी होइ छलै ओकर बेटा
 ओ राजतंत्र कहबै छलै
 किन्तु आइ
 राज्याधिकारी होइ छइ प्रधान मंत्री
 उत्तराधिकारी ओकर बेटा
 एतय राजाक नामे नबि
 होइ छइ समस्त काज
 प्रजाक नाम
 प्रधान मंत्रीक उकासी सं बाइत्याग पर्यन्त
 परसू प्रधान मंत्रीक
 बापक बरखी रहैक
 देशक लेल
 कालि प्रधान मंत्रीक एलसिसियन कूकुरक आडनवाली
 एगो पिल्ला प्रसव केलक

जनताक लेल

आ आइ

हुनक सुपुत्रक जन्मदिनक अवसर पर

अमरावतीक सभ सं पैघ

शीत-ताप नियंत्रित होटल मे

बिराट् पार्टीक आयोजन भेल छि

कोरमा, पोलाव.....

पाइन जकां बहिरहल

विदेशी शराब

(कहियो एहि देश मे दूधक नकी बदैत बल)

समाजवादक लेल

गरीबी हटेवाक लेल

प्रत्येक दिन बान्हल जाइछ

नव-नव

प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष कर

आ शान्ति रक्षार्थ

रोजे होइए पुलिसक ताण्डव नृत्य

ओना

यज्ञ आइयो होइ छइ

छोट सं ल अश्वमेध पर्यन्त

मुदा पुरोहितक बदला

होइत छइ प्राइवेट सैक्रेटरी

आ बलिप्रदान

छागरक नबि

मनुकखेक देल जाइ छइ

भाइ !

ई कहाँदन प्रजातंत्र छैक •

२३ अगस्त, १९७४

अग्रजक नाम / केहन लागत अहां के

भरि दिनुका अकथ परिश्रमक बाद

मुनहारि सांझन घूरी आ

दुरुकला मे भेटय मुउत कुनू नामपद

कुनू आमोद गृहक

जोड़ल अहीक नामक पश्चात्

त केहन लागत

केहन लागत अहां के

जं मनसाघर कुनू

कसाइ खाना-कम किचन-कम रेस्टोरेन्ट
बनि गेल हो

आ

अहाँक अनुजक ससड़ी काटल खलड़ी ओदारल

देह झुलैत हो पछुअति मे

ओकर टटका मांसक कबाब

आ

टटका रक्तक शराब बेचल जाइत हो

त केहन लागत

केहन लागत अहाँ के

जं अहाँक सुतबाक घर

कुनू वेश्यालय बनि गेल हो

आ वेश्याक रूप मे

सजल-धजल मशकड़ी करैत

ककरो संग बैसाओल होथि अहींक बिबाहिता

त केहन लागत

केहन लागत अहाँ के

जं एहि सभक उपभोक्ता

अहींक पड़ोसी होथि

आ

संचालक उपह लोक

जकरा

निराश्रित जानि

कालि राति अहाँ आश्रय देने रहिएक

त केहन लागत ●

२० मई, १९७६

इतिहासहंता/२०

अग्रजक नाम / हम बिसरि गेल छी
(कवि जीवकान्तक लेल)

भाइ !

एकटा दीर्घ अन्तरालक बाद

जखन बैसल छी आइ

लिखबाक हेतु पत्र

नछि, पत्रक जबाब

त फेर मन परि रहल अइ

अहाँक संग बिताओल ओ क्षण

अहाँक गप्प

सिगरहार, हीना, रजनीगंधाक फूल

ओकर सुगन्ध सं महमह करैत बातावरण

त लगैत अछि जेना

सभ नेना मे

नानीक मुँहे सूनल कुनू परी कथा हो

कुनू गुलबकाबली फूलक कथा

एहि गुमसड़ानि बातावरण मे बैसि

ओकर कल्पनो केनाइ कि सम्भव छैक ?

भाइ !

कमलक फूल केना फुलाइत छैक ?

ओइलक फूल कि सरिपहुं लाल होइत छैक ?

केहन होइत छैक खजन चिड़ैया ?

नछि

सरिपहुं हम नछि लिखि सकब

भरिसक ओ भाषा

जाइ मे लिखल जाइत छैक पत्र

अपन आत्मीयक नाम—

हम बिसरि गेल छी ●

२ जून, १९७६

इतिहासहंता/२१

एहि जम्बूद्वीपक भारत खण्ड मे

ह
एही देश मे
एही देश मे भेल रहैक
देवासुर संग्राम
अभूतपूर्व संग्राम
कखनो चोरा-नुका क
कखनो सोझा-सोझी
आ
आइ सं वर्ष तीसेक पहिने
बिजयी भेल छलाह
देवगण दधीचिक अद्विष्ट सं
निर्मित बज्रक प्रभावे पराजित
भेल छल असुरगण पड़ा गेल छल
दानव देश—पाताल लोक

आ ताइ दिन
कतेक धूमधाम सं मनाओल
गेल छल विजयोत्सव सजाओल
गेल छल दीपमालिका कएल
गेल छल शंखध्वनि
आ तकर बाद
पांचोपुर सं आनि
पवित्र माटि
परम दक्ष शिल्पी द्वारा
भेल छल निर्माण
विशालकाय विश्वमोहिनीक
जनगणक कल्याण निमित्त
प्रतिष्ठापित कयल गेल छलीह
अमरावतीक
विशाल अट्टालिका मे
आ
तहिया सं
कलावती कन्या अकां
दिन दुन्ना
राइत चौगुन्ना
बढ़ि रहल शोभा
अमरावतीक
आ एहि देश मे
क्षुधा-पिपासा-महामारी
अशिक्षा-अत्याचार-अनाचारक
साम्राज्यक आयाम
अनायासे बढ़ि रहलए
ओना

एहि सभ सं
 मुक्तिक निमित्त
 प्रति पांच बर्ष पर
 कएल जाइछ महायज्ञ
 छप्पन कोटि मानव केँ साक्षी राखि
 छ कोटि देव-ऋषि द्वारा
 पंचपन कोटि
 पंचानवे लाख स्वर्ण-मुद्राक
 जब-तील-घृतादि सं
 कएल जाइछ होम
 विश्वमोहिनीक नामे
 पुण्य-प्राप्त कतेको
 सशरीर पहुंचि जाइछ अमरावती
 कतेको
 पुण्यक्षयें रहि जाइछ घिनाइत
 छप्पन कोटि लोकक संग
 लगओने आश
 बितबाक पांच द्वा बख
 आ
 अहिना बितल जाइछ
 दिन पर दिन
 मास पर मास
 बर्ष पर बर्ष
 एहि देश मे
 एहि जम्बूद्वीपक भारत खण्ड मे •

२३ अगस्त, १९७७

समान धर्माक नाम / ओना होइत त इएह आयल'छि

ओना होइत त इएह आयल'छि
 जे कुनू कर्णक पराक्रम सं भीतु व्यवस्था
 ओकरा अबैध संतान घोषित करैछ
 आ
 कुनू आदिवासीक गरदन मे

लपेटल जाइछ मुइल सांप प्रजावत्सल राजा द्वारा
(किन्तु, ओकरे वेटाक
'श्राप' सं होइछ जखन मृत्यु ओकर
त ओकरा घोषित करैछ
ऋषि-पुत्र)

ओना होइत त इएह आयल'छि
जे कुनू एकलव्यक ओँठा काटल जाइछ
आचार्य द्वारा

आ
कुनू शूद्रक
तपस्या करैक अपराध मे
मर्यादा पुरुषोत्तम द्वारा
बड़ा देल जाइछ माथ

ओना होइत त इएह आयल'छि
जे लोक कल्याणार्थ
विषपान कएनिहार
शिव के अपन बर्ग सं फुटका
मौखिक सिंहासनारूढ़ क देल जाइछ
यद्यपि हुनक नाम भोला
बुडिबकक पर्याय बनले रहैछ
ते
बन्धु !

करबाक अइ होलिकादाह
ओहन इतिहास-पुराणक
धूकि देवाक अइ ओहन रामराज्य पर
करबाक अइ पर्दाफाश
पाण्डुक नपुंसकताए टाक ननि

ओकर जन्म कथाओक
परीक्षितक दुराचारिताक
रामक इवेक्षाचारिताक
आचार्यक कुकर्मक—
समय आबि गेल'छि
हमरा समकें अपनहिं लिखवाक अइ
अपन इतिहास
जे सरिपहुं थिक संघर्षक
वर्ग संघर्षक
बुरा देवाक अइ ओकर अन्त
ओकरे दिश
हमर श्राप ननि
शक्तिए बनत तक्षक
जे कोटि-कोटि परीक्षितक
बिनाशक कारण बनत
हमरा लोकनिक अव्यवसाय होयत
पथ-प्रदर्शक
आ
संगठित शक्तिये होयत
कुंडल-कवच
आब विलम्ब ननि
बन्धु !
बिगुल वाजि गेल'छि
विषपान त बड़ कएल
अमृत पानक समय आबि गेल'छि •

अग्रजक नाम / इतिहासहंता

आ

ताबत

बहुत बात बीति गेल रहै

बहुत घटना घटि गेल रहै

छ दिनुका बाद

हमरा

आनल गेल छल

असोरा पर

जतय हम

सुनने रही

फ्रांस रूस चीनक

क्रान्तिक कथा

वियतनाम लाओस कम्बोदिया

चीली आ क्यूबाक

संग्रामक कथा

रूसो मार्क्स एन्जिल्स

लेनिन स्टालिन माओ

चू-ते होचिमिन्ह मारकुस

नेहरु सार्त्र

कैस्त्रो चे-गुएवाराक नाम

राजकमल सुकान्त गोकर्ण

छ-सुन लुमुम्बाक

मृत्यु सम्बाद

हेमिंग्वेक आत्महत्या

आर कते रास की...

किन्तु

विश्वास करु भाइ

हम नञि कानल रही

ओना

हाथ-पैर

कैकने धरि रही अबसे

आ

असोरापर सं

गुरुकि गेल रही

ब्रीच आङ्गन मे

ममतामयी माय

चिचिया डठल छलीह

किन्तु

इपह गुरुकष

एगो बन्धन तोड़बाक

पहिल प्रक्रिया छल

आ

हठात् एकदिन

आङ्गनक सीमा नाधि

बहरागेल रही

बाट पर

मायक ममता

बाबूक वात्सल्य

दाइक दुलार

काकीक कोरा

काकाक कन्ह

संगी सभक—

सिनेह केँ ठोकरा

आ

एहिना गुरु भेटल्ल

हमर यात्रा

हम मानैत छी जे

बड़ बिलम्ब सं भेल अइ हमर जन्म

हम मानैत छी जे

एखनो धरि हमरा नबि भेटि सकल

कुनू समानधर्मा सहयात्री

किन्तु

भेटतधरि अबइस

से अइ अटल विश्वास

मुदा—

अहां नबि

अहां सन नबि

अहां

हमरा सोझा सं फराक भ जाब

हम नबि देख' चाहै छी

अहांक मुंह

नबि सुन' चाहै छी

अहांक मुंह कुनू इतिहास

ई एक-एक घटना

एक-एक नाम

की ताइ सं कम महत्वपूर्ण अइ

कते नीक होइत

जे आइ

अहं नबि गेल रहितौ

कुनू

एगो घटना

एगो नाम

एगो इतिहास

आ हमर छाती

सूपसन भ गेल रहैत

किन्तु

अहां से नबि भेलौ

अहां से भइयो ने सकैत छी

आ हम

एखन नबि लिखि सकब

करिया मोसि सं

उजरा कागत पर

कुनू

कविता

कथा

इतिहास

अप्रयोजनीय

अस्थायी

देखैत नबि छी

हमरा हाथ मे

चमकैत पंचकमियां भाला

बलि पड़ल छी हम

लाल दुह-दुह रक्त सं

पिरथीक विशाल वक्ष पर

लिखबा लेल

एगो कविता

एगो कथा

एगो इतिहास

आ

स्वयं बनि जेबा लेल

एगो घटना

एगो नाम

एगो इतिहास •

२३ करवरी, १९७४

इतिहासहंता/३२

अनुजक नाम / काज अहींक थिक •

खएबा मे जत्ते

किएक ने होउक तीत

औषध

फल होइते छैक नोक

रोगी केँ

बुझा देब ई बात

काज अहींक थिक •

१० जुलाई, १९७४

इतिहासहंता/३३

व्यवस्थाक नाम / चेतौनी

बिना कुनू संकतेक
वा
समयक प्रतीक्षा के
सूतल ज्वालामुखी
कखनहुं गरजि सकैछ
गिरि शिखरक आरोही
कखनहुं पिछड़ि सकैछ •

१० जुलाई, १९७४

इतिहासहंता/३४

कंकावतीक कैबरे

देखू अवश्य देखू
स्वर्ण सुअवसर आयल आइ
जम्बूद्वीप महान जतय
जन्मलि प्रियदर्शिनी बाइ
जन्मलि प्रियदर्शिनी बाइ
देश श्मशान बनओलक
बमचा हिजरा केर
पूज्य स्थान बनओलक
कह लोचन कविराय
बन्धुगण कला परेखू
कंकावतीक कैबरे
देखू अवश्य देखू •

इतिहासहंता/३५

सांभ हमरा आङन मे

बालिका अबोध
तोड़ि गराफ हार अपन
मोती समस्त
भरि आङन छिड़िया देलक
अकुअएले रहलै अनुज
बहिनिक किरदानी देखि
हरलै ने फुरलै
हनुमानी अपन तोड़ि लेलक
फेकलक माम आङन मे
देखलक बहिन दिशि
आर बहिन भाइक दिशि
चन्द्रमा बिहुंसि देलक •

२७ जनवरी, १९७५

जेठुआ मेघ

अलुङि कनसारिन के
छोट-छीन खापड़ि मुदा
मुट्टी भरि लाड़नि
बेशखवा चेरा छलि
धुधुआ रहलि भोरहि सं
धिपा रहलि खापड़ि भरि बालु
आ परितहि सांभ
उम्मील देलक एके बेर
चालनि भरि मकै—
भरभरा उठल
उड़ि-उड़ि के चारुकात छिड़िया गेल
लावा मकैयक सभ
उज्जर-उज्जर
गोल-गोल •

१२ अप्रील, १९७७

★★ मिथिलाक मधुबनी जिला क
 खजौली थानाक पालीमोहनगामक, कवि,
 निबंधकार रामलोचन ठाकुर, (कथाकार-
 अप्रदूत, व्यंग्यकार - कुमारेश काश्यप)
 मैथिली साहित्यक सुपरिचित नाम अइ,
 अपन प्रखरता आ वैचारिक सुदृढ़ता स
 एकटा फराक स्तित्व क मालिक सेहो
 हिनक चिन्तन धारा क आधार अइ
 मार्क्सवाद, फलतः 'वर्ग-संघर्ष' आ तइ
 पर आधारित क्रांति, हिनकर रचना क
 मूल होइए. हिनका अग्निलेखन के प्रपंच
 आ विकृति स बचेबाक प्रमुख श्रेय छनि.
 प्रस्तुत संकलन क समस्त रचना मिथिला
 टाइम्स, मिथिला दर्शन, मिथिला भूमि,
 मातृवाणी, अग्निपत्र, शिखा, मैथिली
 दर्शन, मैथिली प्रकाश आ शुल्का मे
 प्रकाशित, दू टा पटना रेडियो स प्रसारित
 तथा किल्लु विदेशी भाषा मे अनुदित अइ.
 अफ्रिकन, अरेबियन आ बंगाली कविता
 आ नाटक अनुवाद, रंगमंच द्वारा
 प्रकाशित नाट्य-विषयक प्रमुख पत्रिका
 आ अग्निपत्र-मैथिली युवा लेखन संकलन
 क सम्पादन. स्वभाव स उग्र, विचार स
 परिपक्व आ व्यवहार स सर्वहारा
 मैथिली स्टेज क उत्तम अभिनेता—
 निर्देशक रामलोचन ठाकुर क ई पहिल
 कविता-संकलन - इतिहासहंता, अग्नि-
 लेखन क दिशा मे ठोस प्रयास अइ.

—कुणाल